विचार वक्तव्य
जगदलपुर, सोमवार 13 नवम्बर 2017
www.dandakaranyasamachar.com

अमृत वाणी

आँख के अंधे को दुनिया नहीं दिखती, काम के अंधे को विवेक नहीं दिखता, मद के अंधे को अपने से श्रेष्ठ नहीं दिखता और स्वार्थी को कहीं भी दोष नहीं दिखता। *-चाणक्य,*

कैसे भरोसा करें लोग जांच पर

गुरुग्रांव के रेयान इन्टरनेशनल स्कूल के विद्यार्थी प्रद्युम्न के हत्या मामले ने सीबीआई जांच के बाद जो मोड़ लिया है उससे एक ही सवाल खड़ा होता है कि लोग जांच पर कैसे भरोसा करें। सर्वज्ञात है कि हरियाणा पुलिस ने प्रद्युम्न हत्या मामले में एक बस कंडक्टर को दोषी करार दे दिया था। यहां तक कि स्कूल के कॉमोड से बरामद छूरी को भी उस कंडक्टर द्वारा प्रयुक्त हथियार चिन्हांकित कर उसे पूरे तरह कठघड़े पर ला खड़ा किया था। अगर मामले की सीबीआई जांच नहीं होती तो न शायद कभी सच्चाई का खुलासा होता और न वास्तविक आरोपी का नाम सामने आता।

अब यह तो मुमकिन नहीं कि हर मामले की सीबीआई जांच हो। ऐसे में अधिकतर मामलों की जांच पुलिस ही करती है। रही बात किसी के द्वारा अपराध कबूलने की बात, तो पुलिस के लाठी के आगे कोई भी कुछ भी कबूलने को आसानी से तैयार हो जायेगा। इन हालातों में अगर हरियाणा पुलिस जैसी जांच हो तो सबकुछ ईश्वर भरोसे, क्योंकि किसी मासूम को फांसी के फंदे की ओर ले जाने में भी उन्हें वक्त नहीं लगेगा।

प्रद्युम्न के पिता शुरू से यह कह रहे थे कि उन्हें हरियाणा पुलिस की जांच पर भरोसा नहीं है मगर उस समय संभवत: किसी ने सोचा भी नहीं होगा कि इतना उलट फेर हो सकता है।

सीबीआई की जांच अभी जारी है। उसी स्कूल के 11वीं कक्षा के एक विद्यार्थी को हत्याकांड का मुख्य आरोपी ठहराये जाने और उसकी स्वीकारोक्ति के बाद भी सीबीआई पूरे मामले के तह तक पहुंचने संबंद्ध सारे पक्षों की सूक्ष्मता से जांच करने में लगातार जुटी हुई है और उससे कई और महत्वपूर्ण खुलासे होने की संभावना दिखाई दे रही है। यह अवश्य है कि दोषी चाहे कोई भी सिद्ध हो प्रद्युम्न को कभी वापस नहीं लाया जा सकेगा मगर सांत्वना केवल यही होगी कि दिवंगत के परिवार को पूरा एवं उचित न्याय मिलेगा और उससे भी बढ़कर एक निर्दोष दंडित होने से बच जायेगा।

आश्चर्य होता है यह सोचकर कि एक इतने गंभीर और हृदय विदारक घटना की जांच हरियाणा पुलिस इतने गलत और लापरवाही पूर्ण तरीके से कैसे कर सकती है कि एक निर्दोष मासूम व्यक्ति को कठघड़े में खड़ा कर दें। अब उस बस कंडक्टर ने हरियाणा पुलिस के खिलाफ मुकदमा दर्ज करने का निर्णय लिया है। होना भी चाहिए ऐसा। तभी संबंधित जांच कर्ताओं को यह समझ में आएगा कि उन्होंने कितना बड़ा अपराध किया है। ऐसे लापरवाह मामलों में जरासी चूक जांच की दिशा बदल सकती है। इतना ज्ञान तो उन्हें पुलिस विभाग में कार्य करने के नाते पता होनी ही चाहिए।

दुख की बात यह है कि किसी एक दल या कुछ लोगों की इन कमजोरियों के कारण पूरी पुलिस सेवा पर लोगों का भरोसा डगमगा जायेगा जो चिन्ता की बात है। इसलिए जरूरी है कि लापरवाह अधिकारियों को सख्त दण्ड दिया जाय ताकि भविष्य में ऐसी चूक करने का दुस्साहस कोई न करे।

राजकाज

जेटली को बर्खास्त करने प्रधानमंत्री से गुहार

अगर विरोधी सरकार और उनके मंत्रियों पर निशाना साधें तो समझ में आता है लेकिन जब अपने ही सवाल खड़े करने लगें तो हजार बार सोचना पड़ता है कि कहीं न कहीं कोई गलती तो हुई है। जिस कारण अपनों को ही मुंह खोलना पड़ रहा है। दरअसल वाजपेयी सरकार में वित्त मंत्री रहे यशवंत सिन्हा ने एक बार फिर वित्तमंत्री अरुण जेटली पर निशाना साधते हुए कह दिया है कि जीएसटी लागू करते वक्त वित्तमंत्री ने दिमाग का इस्तेमाल नहीं किया। सिन्हा ने कहा कि जीएसटी को लेकर रोज बदलाव हो रहे हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को चाहिए कि वह वित्त मंत्री अरुण जेटली को तुरंत बर्खास्त कर दें। वाकई मामला गंभीर है और इससे पूरा देश बुरी तरह प्रभावित हो रहा है। इस कारण सिन्हा की मांग भी जायज लगे तो कोई हैरानी की बात नहीं है।

लालू अब खेलेंगे तेजस्वी पर दांव

राजद सुप्रीमो लालू प्रसाद यादव ने यह कहकर कि राजद 2020 चुनाव तेजस्वी यादव के नेतृत्व में लड़ेगा सही मायने में एक नया दांव खेला है। बकौल लालू तेजस्वी में नेतृत्व के वो सारे गुण हैं जो एक टीम लीडर में होने चाहिए। चूंकि लालू को नीतिश ने जबरदस्त धोखा दिया है और अभी तक वो सदमें से बाहर नहीं निकल पाए हैं क्योंकि भाजपा लगातार उन पर और उनके परिवार पर हमले कर रही है तो उन्हें अब अपने से ध्यान हटाने का एक ही विकल्प बचता है और वह यह कि पार्टी की कमान किसी और के हाथ में थमा दें। लेकिन यह करना बहुत मुश्किल काम है। इसलिए बीच का रास्ता निकाला गया और तेजस्वी पर दांव खेल दिया गया है। अब यह तो मतदाता ही तय करेगा कि आगामी चुनाव में वो उनका साथ देते हैं या नहीं। बहरहाल लालू ने कम से कम यह तो स्वीकार कर लिया कि यह जमाना उनका नहीं बल्कि यूथ का है और इसलिए उन्होंने तेजस्वी को आगे किया है। इसके बाद जो लालू के फैसले में जो परिवारवाद देखना चाहते हैं वो देखते रहें।

इतिहास का मजाक न बनाएं

संचार क्रांति के इस युग में यह कहने में कोई संदेह नहीं कि सिनेमा, समाज का दर्पण है। उदहारण के लिए अभी हाल ही में रिलीज हुई दंगल, सुल्तान में जहाँ एक ओर हरियाणा की सामाजिक संरचना को बहुत ही सूक्ष्म तरीके से बड़े परदे पर उकेरा गया तो वहीँ पिंक जैसी फिल्मों में महिलाओं के प्रति हो रहे लैंगिक भेदभाव का मार्मिक अंकन किया गया। यदि बात संजय लीला भंसाली की जाये तो हम पाते हैं कि ये बॉलिवुड के सफल निर्देशक हैं। इन्होंने हम दिल दे चुके सनम, देवदास, ब्लैक, गोलियों की रासलीला रामलीला, बाजीराव मस्तानी जैसी सफल फिल्मों का निर्देशन किया है। हालाँकि देवदास, बाजीराव मस्तानी में इनके ऊपर इतिहास से छेड़छाड़ करने के आरोप पहले भी लगे हैं और अब अपनी आगामी फिल्म पद्मावती को लेकर आजकल ये विवादों में हैं।

पद्मावती फिल्म के विवाद की मुख्य वजह यह बताई जा रही है कि इन्होंने रानी पद्मावती के आदर्श राजपूत नारी के व्यक्तित्व को परिवर्तित कर फिल्म में उनके आदर्श चरित्र से विचलन दिखाया है। राजपूत समाज और राज परिवार की क्षत्राणियों का कहना है कि फिल्म में रानी पद्मावती को अलाउद्दीन खिलजी के सपने में दिखाया गया है, सोलह हजार रानियों के साथ जौहर करने वाली रानी को नर्तकी के तौर पर पेश कर उनके सतीत्व का अपमान किया गया है। साथ ही राजपूती पोशाक का गलत रूप दिखाया गया है। इन सभी वजहों को लेकर राजपूत समाज के लोगों में फिल्म को लेकर काफी आक्रोश देखने को मिल रहा है। राजस्थान सहित देश के कई राज्यों में फिल्म का विरोध प्रदर्शन भी शुरू हो गया है। गौरतलब है कि फिल्म पद्मावती को सेंसर बोर्ड ने रिलीज करने की अनुमति दे दी है। आगामी महीने की 1 दिसंबर को फिल्म का रिलीज होना तय है। इसके उपरांत राजपूत समाज ने फिल्म रिलीज होने से पहले स्क्रीनिंग पर दिखाने की मांग की है। वहीं फिल्मकार संजय लीला भंसाली ने एक वीडियो के माध्यम से फिल्म में किसी की भावनाएं आहत होने से साफइंकार किया है। दरअसल, यह भी सच है कि विवादों में रहने वाली फिल्मे बॉक्स ऑफिस पर हिट हो जाती है। जिन्हें विदेशों में भी भारी संख्या में देखा और पसंद किया जाता है। इन सब से बेगैरत कुछ उद्दंड लोगों का गिरोह सडकों पर उतरकर विरोध प्रदर्शन के लिए हर समय उतावला दिखता है।

अब जहां तक रानी पद्मावती की कहानी की बात है तो उसे जानने के लिए हमारे पास ऐतिहासिक स्रोत तो है ही। साथ ही मालिक मोहम्मद जायसी द्वारा रचित 'पद्मावत' जैसा प्रामाणिक साहित्यिक स्रोत भी है। यदि इतिहास पर गौर करें तो हम पाते हैं कि रानी पद्मावती सिंघल द्वीप के राजा गंधर्वसेन और रानी चम्पावती की पुत्री थी। रानी पद्मिनी बचपन से ही बहुत सुंदर थी। बेटी के बड़ी होने पर उसके पिता ने रिवाज के अनुसार उसका स्वयंवर आयोजित किया। इस स्वयंवर में उसने सभी हिन्दू राजाओं और राजपूतों को बुलाया। चित्तौड़गढ़ के राजा रतन सिंह भी स्वयंवर में गए थे। राजा रतन सिंह (भीमसिंह) ने स्वयंवर जीता और पद्मिनी से विवाह किया। विवाह के बाद पद्मिनी के साथ वापस चित्तौड़ लौट गए। एक अच्छे शासक और पति होने के अलावा रतन सिंह कला के संरक्षक भी थे। उनके दरबार में कई प्रतिभाशाली लोग थे, जिनमें से राघव चेतन संगीतकार भी एक था। राघव चेतन एक जादूगर भी हैं, इस बारे में लोगों को पता नहीं था। वह अपनी प्रतिभा का उपयोग शत्रु को मार गिराने में करता था। कहा जाता है कि एक दिन राघव चेतन का बुरी आत्माओं को बुलाने का काम चल रहा था और वह रंगे हाथों पकड़ा गया। इस बात का पता चलते ही रावल रतन सिंह ने उसे अपने राज्य से निकाल दिया। रतन सिंह की इस सजा के कारण राघव चेतन उसका दुश्मन बन गया। अपने अपमान का बदला लेने के लिए राघव चेतन दिल्ली चला गया। उस समय दिल्ली का सुल्तान अलाउद्दीन खिलजी था। राघव चेतन ने सुल्तान से रानी पद्मिनी की सुन्दरता का बखान किया, जिसे सुनकर खिलजी के भीतर रानी पद्मिनी से मिलने की इच्छा जागी।

राघव चेतन से तारीफसुनने के बाद बेचैन सुल्तान खिलजी रानी पद्मिनी की एक झलकह पाने को बेताब था। चित्तौड़गढ़ किले की घेराबंदी के बाद खिलजी ने राजा रतन सिंह को ये कहकर संदेशा भेजा कि वह रानी पद्मिनी को अपनी बहन समान मानता है और उससे मिलना चाहता है। लेकिन रानी तैयार नहीं थी। रानी ने एक शर्त रखी। रानी पद्मिनी ने कहा कि वह अलाउद्दीन को पानी में परछाई में अपना चेहरा दिखाएंगी। जब अलाउद्दीन को ये खबर पता चली कि रानी पद्मिनी उससे मिलने को तैयार हो गई है वह अपने कुछ सैनिकों के किले में गया। रानी पद्मिनी की सुंदरता को पानी में परछाई के रूप में देखने के बाद अलाउद्दीन खिलजी ने रानी पद्मिनी को अपना बनाने की ठान ली। वापस अपने शिविर में लौटते वक्त अलाउद्दीन खिलजी के साथ रतन सिंह भी थे। इस दौरान खिलजी के सैनिकों ने आदेश पाकर और मौका देखकर रतन सिंह को बंदी बना लिया। रतन सिंह की रिहाई की शर्त थी पद्मिनी। गोरा और बादल की बहादुरी और चालाकी से राजा रतन सिंह को खिलजी की कैद से मुक्त करवाया गया। अपने को अपमानित महसूस करते हुए सुल्तान ने गुस्से में आकर अपनी सेना को चित्तौड़गढ़ किले पर आक्रमण करने का आदेश दिया। रतन सिंह की सेना खिलजी की सेना के समक्ष बहुत छोटी थी, किन्तु राजपूतों ने बहादुरी से अपने प्राणों की अंतिम साँस तक खिलजी के लड़ाकों का सामना किया और खुद रतन सिंह भी बहादुरी से लड़ते हुए वीरगति को प्राप्त हुए। ये सूचना पाकर रानी पद्मिनी (पद्मावती) ने चित्तौड़ की औरतों से कहा कि अब हमारे पास दो विकल्प हैं। या तो हम जौहर कर लें या फिर विजेती सेना के समक्ष अपना निरादर सहें। सभी महिलाओं की एक ही राय थी। एक विशाल चिता जलाई गई और रानी पद्मिनी के बाद चित्तौड़ की सारी औरतें उसमें कूद गई और इस प्रकार दुश्मन बाहर खड़े देखते रह गए।

जिन महिलाओं ने जौहर किया उनकी याद आज भी लोकगीतों में जीवित है, जिसमें उनके कार्य का गौरव बखान किया जाता है।

यदि हम साहित्यिक स्रोत जायसी के पद्मावत का अध्ययन करें तो भी हमें उपयुक्त जानकारी ही प्राप्त होती है। जायसी ने एकमात्र परिवर्तन किया है रत्नसेन की मृत्यु को लेकर। जायसी के अनुसार रत्नसेन अलाउद्दीन से युद्ध करते हुए नहीं बल्कि देवपाल से युद्ध करते हुए वीरगति को प्राप्त होते हैं। जायसी ने ऐसा इसलिए किया क्योंकि जायसी अलाउद्दीन के हाथों रत्नसेन को मरने नहीं देना चाहते थे। ऐसा करने का अर्थ खलनायक के हाथों नायक की मौत दिखाना होता। इसलिए जायसी ने देवपाल की कल्पना की है। वैसे भी पद्मावत इतिहास नहीं, साहित्य है और साहित्य का निर्माण तथ्यों से नहीं, कल्पनाओं से होता है।

साहित्य की तरह फिल्में भी समाज का आईना होती हैं। जिस प्रकार साहित्यकार ऐतिहासिक रचना में कुछ नवीन मौलिकताएं लाता है, उसी प्रकार फिल्म निर्देशक भी अपनी फिल्मों में कुछ नया दिखाना चाहता है। जैसे निराला ने `राम की शक्ति पूजा' में नवीन कल्पनाओं का समावेश किया है और खुद जायसी ने भी पद्मावत में अपने सांस्कृतिक समन्वय को स्थापित करते हुए मौलिकता दिखाई है, द्योतव्य है कि साहित्यकारों की ये नवीन कल्पनाएं देश, काल ())और परिस्थिति के अनुकूल होती हैं और समाज के हित में होती हैं। साहित्यकारों से सीख लेते हुए फिल्म निर्देशकों को भी इतिहास और अपनी कल्पना का समन्वय करते समय ध्यान रखना चाहिए कि उनकी नवीन कल्पनाएँ समाज के हित में हों, न कि समाज में नफ़रत व अलगाव की भावना फैलाने के लिए।

संजय लीला भंसाली को भी यदि इतिहास का उपयोग करके फिल्में बनानी हैं तो उनको चाहिए कि इसमें सकारात्मक दृष्टिकोण से कल्पनाओं को जोड़ना चाहिए। ऐसी कल्पनाएं जो मानव सभ्यता के लिए विकास का प्रतिमान स्थापित करें। जयशंकर प्रसाद की तरह तात्कालिक समस्याओं का समाधान इतिहास के सहारे जनता के सामने प्रस्तुत करें। फिल्म निर्देशकों की कल्पनाएं ऐसी होनी चाहिए जो समाधान की कल्पना का समन्वय करे सकें, 'पद्मावती' फिल्म में की गयी फूहड़ कल्पनाओं की तरह न हों, जो समाज के सामने एक नई समस्या खड़ी कर दे।

-देवेंद्रराज सुथार,
(ये लेखक के अपने विचार है)

सकारात्मक सोंच के साथ बदलाव जरूरी

परिवर्तनशील समय में हर कोई व्यक्ति अपने अंदर बदलाव लाना चाहता है। जीवन में आगे बढ़ने के लिए अपने अंदर बदलाव लाना जरूरी है। आज के इस प्रतिस्पर्धा भरी जिन्दगी में लोग अपने आप को अपडेट रखना चाहते हैं, ताकि वे समय के साथ कदम से कदम मिलाकर चल सके। ऐसा नहीं करने पर लोग अन्य लोगों की अपेक्षा पिछड़ जाते हैं। लोगों को हमेशा सकारात्मक सोंच रखते हुए आगे बढ़ना चाहिए और देश के बढ़ते विकास में सहयोग करना चाहिए।

पहले के समय में लोग अपनी स्थिति और परिवेश अपनी परम्परा, लोक संस्कृति, परिवारवाद, सामाजिक बंधन के अनुसार ढाल के चलते थे। लेकिन समय के परिवर्तन के साथ अब लोग समझ चुके है कि पुरानी सोंच व पिछड़ी मान्यताओं के साथ चलना थोड़ा मुश्किल हो रहा है। आगे बढ़ने के लिए अपने आप में परिवर्तन लाना जरूरी है। सकारात्मक परिवर्तन लाकर ही हम आगे तक जा सकते हैं और अपने अंदर बदलाव लाकर अन्य लोगों को भी प्रेरणा देकर पूरे देश में बदलाव लाया जा सकता है। लेकिन अभी भी पुराने परम्पराओं को मानने वाले लोग बहुत है, जिनकी वजह से उनके भीतर बहुत सी कुरीतियां है। जैसे कि घर में शौचालय नहीं बनवाना, इससे घर की देवी-देवता नाराज हो जाएंगे। घर की महिलाएं को घर के बाहर नहीं जाने देना, पुरूष प्रधान समझना, बेटियों और बहुओं को नौकरी नहीं कराना, बहू-बेटिया घर के बाहर जाएंगी तो बिगड़ जाएंगी। शिक्षा के लिए ज्यादा दूर स्कूल नहीं भेजना, कम उम्र में ही शादी करा देना। इस प्रकार की सोंच की वजह से हमारा देश अभी भी पिछड़ा हुआ है। इन सब परिस्थितियों को बदलने के लिए हमारे देश में बहुत से महापुरूषों ने प्रयास किए। बहुत हद तक इस प्रयासों से परिवर्तन भी आएं। अब वक्त आ गया है कि लोग अपनी सोंच को बदले और समय के साथ कदम से कदम मिलाकर चलें। जिंदगी में जैसे भी पल हों उनसे सबक लेते हुए कुछ बदलाव लाने की जरूरत है, जो इंसान की सोंच और शक्तियों को निखारते है।

पहले के समय में भी लोग बैलगाड़ी, साईकिल का उपयोग करते थे, लेकिन अब हवाई जहाज तक का सफर कर रहे हैं। यह सब परिवर्तन ही तो है। बदलाव से ही व्यक्ति उन्नति की ओर अपने कदम रख सकता है। समय के साथ चलना और बदलाव अति आवश्यक है। अगर व्यक्ति समय के साथ नहीं चलेगा तो वह पीछे हो जाएंगे। बुद्धिमानी इसी में है वे अपने जीवन में परिवर्तन लाए और जिन्दगी को बदलकर चले। सोंच बदलों और दुनियां के साथ चलों। अधिकतर व्यक्ति अपनी पुरानी परंपरावादी सोंच के कारण आगे नहीं बढ़ पाते, जिसके कारण उन्हें काफी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। हमारा देश प्रत्येक क्षेत्र में बहुत आगे बढ़ चुका है। इसके साथ ही लोग भी अपने जीवन में सकारात्मक बदलाव लाकर देश-दुनिया के साथ कदम से कदम मिलाकर चल रहे हैं।

अब समय आ गया है बदलाव लाने का। जब तक लोग अपने आप को नहीं बदलेंगे देश में उन्नति और विकास नहीं आएगी। शासन अपने हर संभव प्रयास से देश की जनता को आत्मनिर्भर, उर्जावान बनाने के लिए दृढ़संकल्पित है। वे विभिन्न जनकल्याणकारी योजनाओं के माध्यम से आमजनता को आगे बढ़ाने का प्रयास कर रही है। किन्तु अभी भी देश की कुछ जनता अपनी पुरानी पिछड़ी मान्यताओं और बंधनकारी सोंच के कारण पिछड़े हुए है। इन्हीं सोंच को बदलकर कर आगे बढ़ने की जरूरत है। देश में अनेक ऐसी योजनाएं संचालित की है, जिससे हमारे देश में स्वास्थ्य, शिक्षा, कौशल विकास के माध्यम से लोगों को जागरूक किया जा रहा है। देश की हर बेटी को शिक्षित होना, स्वच्छ भारत मिशन से हर घर शौचालय निर्माण कराना, अपने घर, आंगन, शहर को स्वच्छ व सुंदर बनाए रखना। इन सभी बदलाव से हमारा देश विकसित देशों में गिना जाएगा। परन्तु किसी देश व राज्य में योजना बनाने से वह पूर्ण नहीं होता, जब तक की देश या राज्य की जनता उस पर अमल ना करें। हमारे देश के ही लोग दूसरे अन्य देश में जाकर उस देश का नियम का कड़ाई से पालन करते हैं, पर अपने ही देश में नियम का पालन जरूरी नहीं समझते। इसी प्रकार हम भारतीय नागरिक अपनी-अपनी जिम्मेदारी समझना शुरू कर दें तो यह देश अन्य विकासशील देश की तुलना में काफी आगे होगा। इसलिए अपने आप में सकारात्मक बदलाव लाना बहुत जरूरी है।

-तेजबहादुर सिंह भुवाल,
(ये लेखक के अपने विचार है)

जंतर मंतर से धरना प्रदर्शनों का हटाया जाना कई प्रश्न खड़े करता है

जंतर-मंतर का पूरा नजारा बदल गया है। वर्षों से जहां चारो ओर आंदोलनकारियों के बैनरों पोस्टरों तथा तरह.तरह के तंबुओं की भरमार होती थी वहां अब करीने से सजाए गए फूल भरे गमले दिख रहे हैं। हर दिन की चहल.पहल और जन समूह गायब है। दिल्ली पुलिस के पास राष्ट्रीय हरित प्राधिकरण के आदेश को अमल करने की जिम्मेवारी थी और उसने वही किया। अपनी.अपनी मांगों और शिकायतों को लेकर वहां बैठे लोग अपने.आप तो हटने वाले नहीं थे, इसलिए पुलिस ने अपने स्वभाव के अनुरुप जितना संभव था बल प्रयोग किया।

सबसे ज्यादा समस्या पूर्व सैनिकों के साथ पैदा हुआ। वे वन रैंक वन पेंशन में अपनी बची हुई मांगों को लेकर वहां लंबे समय से धरने पर बैठे थे। पुलिस ने जिस तरह का बल प्रयोग किया उससे फिर यह साबित हो गया कि हमारी पुलिस को अभी भी संवेदनशील मामलों से निपटने के तौर.तरीके सीखने की जरुरत है। बिना बल प्रयोग किए भी मामले से निपटा जा सकता है। कोई व्यक्ति या व्यक्ति समूह इस भावना से जंतर.मंतर पर आया है कि उनके साथ जो अन्याय हुआ है उसे यहां से सरकार तक पहुंचाया जा सकता है और उसे वहां से हटने के लिए कहा जाए तो उस पर क्या गुजरेगी इसका अनुमान सहज ही लगाया जा सकता है। वैसे तो जब 5 अक्टूबर को राष्ट्रीय हरित प्राधिकरण ने जंतर.मंतर से धरना.प्रदर्शन बंद करने का आदेश दिया उसी दिन यह तय हो गया था कि करीब ढाई दशकों से देश भर के आंदोलनकारियों या सरकारों के किसी निर्णय से असंतुष्ट या अन्याय के शिकार लोगों को अपनी आवाज उठाने का गवाह बना जंतर मंतर इन मामलों में इतिहास बन सकता है। राष्ट्रीय हरित प्राधिकरण में कुछ लोग मामला लेकर गए थे कि वहां होने वाली आवाज से प्रदूषण फैलता है तथा उनके शांति से रहने एवं सोने के अधिकार का हनन होता है। प्राधिकरण ने इस याचिका पर फैसला देते हुए एक साथ दिल्ली सरकारए एनडीएमसी और दिल्ली पुलिस को आदेश दिया कि धरना.प्रदर्शन के लिए लगाए गए लाउड स्पीकर्स को फौरन जंतर.मंतर मार्ग से हटाए।

साथ ही सभी तरह के धरनाए प्रदर्शन, आंदोलन, सभा, जनसभा और रैली पर रोक लगाए। जंतर.मंतर रोड पर धरने पर बैठे सभी प्रदर्शनकारियों को तत्काल हटाकर रामलीला मैदान में शिफ्ट किया जाए। इसके अनुसार इस इलाके में लगातार प्रदर्शनों और इनमें इस्तेमाल हो रहे लाउड स्पीकर्स से ध्वनि प्रदूषण फैल रहा है। इस इलाके के लोगों को भी शांति से जीने का हक है। वो भी चाहते हैं कि उनका घर ऐसी जगह होए जहां वातावरण प्रदूषण मुक्त हो। इन्हें पांच साल का वक्त दिया गया था। इस बीच न किसी ने पुनर्विचार याचिका दायर की और न ही इस आदेश के विरुद्ध कोई न्यायालय गया। इसमें आदेश पालन होना ही था। किंतु इसने एक साथ कई प्रश्न हमारे सामने उपस्थित किए हैं। लोकतंत्र में अपनी मांगों को लेकर अहिंसक तरीके से कानून के दायरे में धरना.प्रदर्शन हमारा अधिकार है। अगर यह अधिकार है तो इसका पालन हो एवं इसकी रक्षा हो इसका दायित्व भी सरकारी एजेंसियों को है। यानी यह उनकी जिम्मेवारी है कि अपने इस अधिकार का प्रयोग लोग कर सकें इसके लिए उन्हें समुचित जगह और अवसर उपलब्ध कराए। दुनिया के हर लोकतांत्रिक देश में इसके लिए सरकारें व्यवस्था करती है। देश का केन्द्र दिल्ली है तो लोग अपनी मांगें और शिकायतें लेकर ज्यादा संख्या में यहां पहुंचेंगे। एक समय था जब दिल्ली के वोट क्लब पर ऐसे सारे आंदोलन होते थे। वहां से केन्द्र सरकार के कार्यालय एवं संसद भवन दोनों पास थे। सत्ताधारी नेतागण और सरकारी अधिकारियों को यहां की गतिविधियां सीधे दिखाई पड़ती थीं। उनकी आवाजें भी कई बार उनकी कानों तक यूं ही पहुंच जाती थी। अचानक 1993 में उस स्थान को धरना.प्रदर्शन के लिए प्रतिबंधित कर दिया गया। उसकी जगह जंतर.मंतर से लगे सड़क के फुटपाथ को इसके लिए अधिकृत किया गया।

उस निर्णय का भी काफी विरोध हुआए लोगों ने जबरन वहां धरने देने की कोशिश की और गिरफ्तारियां दीं लेकिन उनकी शक्ति इतनी नहीं थी कि उस निर्णय को बदलवाया जा सके। जंतर.मंतर के मामले में तो ऐसा भी नहीं हो रहा है। राष्ट्रीय हरित प्राधिकरण के आदेश को उद्धृत करते हुए दिल्ली सरकार या केन्द्र सरकार कह सकती है कि उसके पास कोई चारा ही नहीं है। किंतु इसके साथ यह भी सच है कि सरकारों ने जंतर.मंतर को धरनास्थल बनाए रखने के लिए प्राधिकरण में ठीक से कानूनी लड़ाई भी नहीं लड़ी। दिल्ली सरकार तो जंतर.मंतर के आंदोलन की पैदाइश है। उसका तो ज्यादा भावनात्मक लगाव उस जगह से होना चाहिए था। उसे न केवल प्राधिकरण में जोरदार ढंग से लोगों के आंदोलन करने के अधिकारों का पक्ष रखना चाहिए था बल्कि फैसले के विरुद्ध उपरी अदालत में जाना चाहिए था।

-अवधेश कुमार,
(ये लेखक के अपने विचार है)